2 नेताजी का चश्मा

– स्वयंप्रकाश

उन्मुखीकरण

एक अच्छे सैनिक के गुण हैं देशभक्ति, सजगता, धैर्य, साहस और अनुशासन। भारतीय सैनिकों में ये गुण कूट-कूट कर भरे हैं। यही नहीं बाढ़, तूफ़ान, भूकंप, सूखा, आदि प्राकृतिक विपदाओं के समय वे जिस प्रकार की सहायता करते हैं, इससे उनकी सेवा-भावना का भी परिचय मिलता है।

प्रश्न

1. आदर्श सेना की क्या-क्या विशेषताएँ हो सकती हैं?
2. प्राकृतिक विपदाओं के समय सैनिकों का क्या सहयोग होता है?
3. आप अपना देश-प्रेम कैसे प्रकट करेंगे?

उद्देश्य

छात्रों में कहानी लेखन कौशल का विकास करना, शब्द भंडार में वृद्धि करना, कहानी द्वारा कल्पना-शक्ति का विकास करना और कहानी की भाषा शैली का विकास करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

किसी घटना या बात का सुंदर ढंग से प्रस्तुतीकरण ही कहानी है। कहानी एक लघु आकार की गद्य रचना है। कथावस्तु, पात्र, संवाद, वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य आदि इसके तत्व हैं। यह एक ऐतिहासिक कहानी है। इसकी शैली वर्णनात्मक है।

लेखक परिचय

स्वयंप्रकाश का जन्म सन् 1947 में इंदौर, मध्यप्रदेश में हुआ। आठवें दशक में उभरे स्वयं प्रकाश आज समकालीन कहानी के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनके 13 कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। जिनमें सूरज कब निकलेगा, आयेंगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी और संधान उल्लेखनीय है। मध्यवर्गीय जीवन के कुशल चितेरे स्वयं प्रकाश की कहानियों में वर्ग शोषण के विरुद्ध चेतना है तो हमारे सामाजिक जीवन के भेद-भाव के खिलाफ़ प्रतिकार का स्वर भी है। रोचक किस्सागोई शैली में लिखी गई उनकी कहानियाँ हिंदी की वाचिक परंपरा को समृद्ध करती हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश :चारों ओर सीमाओं से घिरे भूभाग का नाम ही देश नहीं होता। देश बनता है इसमें रहने वाले सभी नागरिकों, नदियों, पहाड़ों, पेड़-पौधों, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों से। इन सबसे प्रेम करने तथा इनकी समृद्धि के लिए प्रयास करने का नाम देशभक्ति है। इस कहानी में देश के निर्माण में सब अपने-अपने तरीके से सहयोग देते हैं, बड़े ही नहीं बच्चे भी इसमें शामिल हैं। हालदार साहब ने पानवाले से पूछा क्यों भाई, क्या बात है? यह तुम्हारे नेता जी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है? पानवाले ने कहा, कैप्टन चश्मेवाला करता है। आइए, उस चश्मेवाले के बारे में जानेंगे जो एक देशभक्त ही नहीं बल्कि देशभक्तों का भी प्रेमी है।

हालदार साहब को हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रना पड़ता था। कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का छोटा-सा कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका भी थी। नगरपालिका थी तो कुछ-न-कुछ करती भी रहती थी। कभी कोई सड़क पक्की करवा दी, कभी कुछ पेशाबघर बनवा दिये, कभी कबूतरों की छतरी बनवा दी तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। इसी नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार 'शहर' के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। यह कहानी उसी प्रतिमा के बारे में है, बल्कि उसके भी एक छोटे से हिस्से के बारे में।

पूरी बात तो अब पता नहीं, लेकिन लगता है कि देश के अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी नहीं होने और अच्छी मूर्ति की लागत और अनुमान और उपलब्ध बजट से कहीं बहुत ज्यादा होने के कारण काफ़ी समय ऊहापोह और चिट्ठी-पत्री में बरबाद हुआ होगा और बोर्ड की शासनावधि समाप्त होने की घड़ियों में किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा, और अंत में कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के इकलौते ड्राइंग मॉस्टर मान लीजिए मोतीलाल जी-को ही यह काम सौंप दिया गया होगा, जो महीने-भर में मूर्ति बनाकर 'पटक देने' का विश्वास दिला रहे थे।

जैसा कि कहा जा चुका है, मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट। और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो....' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक ही चीज़ की कसर थी जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके तभी उन्होंने इसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुक भरी मुसकान फैल गयी। वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल! जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गयी तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का हैं। वरना तो देश-भक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज़

SCERT TELANGANA

होती जा रही है।

दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखायी दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है। पहले मोटे फ्रेमवाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतुक और बढ़ा। वाह भई! क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है।

तीसरी बार फिर नया चश्मा था।

हालदार साहब की आदत पड़ गयी, हर बार कस्बे से गुज़रते समय चौराहे पर रुकना, पान खाना और मूर्ति को ध्यान से देखना। एक बार जब कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा तो पानवाले से ही पूछ लिया, क्यों भई! क्या बात है? यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है?

पानवाले के खुद के मुँह में पान ठूँसा हुआ था। वह एक काला मोटा और खुशमिज़ाज आदमी था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर वह आँखों-ही-आँखों में हँसा। उसकी तोंद थिरकी। पीछे घूमकर उसने दुकान के नीचे पान थूका और अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाकर बोला, कैप्टन चश्मेवाला करता है।

क्या करता है? हालदार साहब कुछ समझ नहीं पाये।

चश्मा चेंज कर देता है। पानवाले ने समझाया।

क्या मतलब? क्या चेंज कर देता है? हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाये।

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किधर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उधर दूसरा बिठा दिया।

अब हालदार साहब को बात कुछ-कुछ समझ में आयी। एक चश्मेवाला है जिसका नाम कैप्टन है। उसे नेताजी की बगैर चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है। बल्कि आहत करती है, मानो चश्मे के बगैर नेताजी को असुविधा हो रही हो। इसलिए वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है। लेकिन जब कोई ग्राहक आता है और उसे वैसे ही फ्रेम की दरकार होती है जैसा मूर्ति पर लगा है तो कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति पर लगा फ्रेम संभवतः नेताजी से क्षमा माँगते हुए लाकर ग्राहक को दे देता है और बाद में नेताजी को दूसरा फ्रेम लौटा देता है। वाह! भई खूब! क्या आइडिया है।

लेकिन भाई! एक बात अभी भी समझ में नहीं आयी। हालदार साहब ने पानवाले से फिर पूछा, नेताजी का ओरिजिनल चश्मा कहाँ गया?

पानवाला दूसरा पान मुँह में ठूँस चुका था। दोपहर का समय था, 'दुकान' पर भीड़-भाड़ अधिक नहीं थी। वह फिर आँखों- ही-आँखों में हँसा। उसकी तोंद थिरकी। कत्थे की डंडी फेंक,पीछे मुड़कर उसने नीचे पीक थूकी और मुसकराता हुआ बोला, मास्टर बनाना भूल गया।

प्रश्न

1. गाँवों में मुख्य रूप से क्या-क्या सुविधाएँ होनी चाहिए?
2. सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा क्यों लगायी गयी होगी?
3. हालदार को पानवाले की बातें सुनकर आश्चर्य क्यों हुआ होगा?
4. हालदार साहब ने उस कस्बे के नागरिकों को क्यों सराहा होगा?

SCERT TELANGANA

पानवाले के लिए यह एक मज़ेदार बात थी लेकिन हालदार साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली। यानी वह ठीक ही सोच रहे थे। मूर्ति के नीचे लिखा 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल' वाकई कस्बे का अध्यापक था। बेचारे ने महीने-भर में मूर्ति बनाकर पटक देने का वादा कर दिया होगा। बना भी ली होगी लेकिन पत्थर में पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए-काँचवाला- यह तय नहीं कर पाया होगा। या कोशिश की होगी और असफल रहा होगा। या बनाते-बनाते 'कुछ और बारीकी' के चक्कर में चश्मा टूट गया होगा। या पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा। उफ़ .....।

हालदार साहब को यह सब कुछ बड़ा विचित्र और कौतुकभरा लग रहा था। इन्हीं खयालों में खोए-खोए पान के पैसे चुकाकर चश्मेवाले की देश-भक्ति के समक्ष नतमस्तक होते हुए वह जीप की तरफ़ चले, फिर रुके, पीछे मुड़े और पानवाले के पास जाकर पूछा, क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है? या आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही?

पानवाला नया पान खा रहा था। पान पकड़े अपने हाथ को मुँह से डेढ़ इंच दूर रोककर उसने हालदार साहब को ध्यान से देखा, फिर अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाई और मुसकराकर बोला- नहीं साब! वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल! वो देखो, वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फ़ोटो-वोटो छपवा दो उसकी कहीं।

हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक् रह गये। एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाये एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगाता है। हालदार साहब चक्कर में पड़ गये। पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ़ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। काम भी था। हालदार साहब जीप में बैठकर चले गये।

दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रते रहे और नेताजी की मूर्ति में बदलते हुए चश्मों को देखते रहे। कभी गोल चश्मा होता, तो कभी चौकोर, कभी लाल, कभी काला, कभी धूप का चश्मा, कभी बड़े काँचों वाला गोगो चश्मा ..... पर कोई-न-कोई चश्मा होता ज़रूर.... उस धूलभरी यात्रा में हालदार साहब को कौतुक और प्रफुल्लता के कुछ क्षण देने के लिए।

फिर एक बार ऐसा हुआ कि मूर्ति के चेहरे पर कोई भी, कैसा भी चश्मा नहीं था। उस दिन पान की दुकान भी बंद थी। चौराहे की अधिकांश दुकानें बंद थीं।

अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था। हालदार साहब ने पान खाया और धीरे से पानवाले से पूछा- क्यों भई, क्या बात है? आज तुम्हारे नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं है?

पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला- साहब! कैप्टन मर गया।

और कुछ नहीं पूछ पाये हालदार साहब। कुछ पल चुपचाप खड़े रहे, फिर पान के पैसे

SCERT TELANGANA

चुकाकर जीप में आ बैठे और रवाना हो गये।

बार-बार सोचते, क्या होगा उस क़ौम का जो अपने देश की ख़ातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है। दुखी हो गये। पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुज़रे। कस्बे में घुसने से पहले ही खयाल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा।.....क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया। .....और कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गयीं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ क़दमों से मूर्ति की तरफ़ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गये।

5. कस्बेवाले चश्मेवाले को कैप्टन क्यों कहते थे?
6. चश्मेवाले को चश्मा लगाते देखकर हालदार साहब ने क्या सोचा होगा?
7. चश्मे के बारे में पूछने पर पानवाला उदास क्यों हुआ?

मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आयीं।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देशप्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी ढंग से देशप्रेम प्रकट करते हैं। जैसे कि सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि। अब बताइए कि आप किन-किन कामों से देशभक्ति प्रकट करते हैं?
2. कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी न किसी क्षेत्र में प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन सा हो गया है। बताइए कि ऐसा करने का क्या उद्देश्य है?

(आ) पाठ पढ़कर उत्तर दीजिए।

1. चश्मेवाले के बारे में जानने के लिए हालदार साहब उत्सुक क्यों थे?
2. चश्मेवाला सच्चे अर्थों में देशभक्त था। पाठ के आधार पर बताइए।
3. हालदार साहब नेताजी की मूर्ति के सामने भावुक क्यों हुए?

(इ) निम्नलिखित शब्दों से जुड़े वाक्य पाठ में कहाँ-कहाँ हैं। ढूँढ़कर लिखिए।

1. संगमरमर 2. देशभक्ति 3. खुशमिज़ाज

SCERT TELANGANA

(ई) निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सरलता मानव का स्वाभाविक गुण है। आडंबर जीवन को जटिल बनाता है और हृदय में विकार उत्पन्न करके उसे कलुषित बनाता है। अहंकार, आडंबर आदि तुच्छ विचारों के कुप्रभाव से मनुष्य अब कृत्रिम बन रहा है। सरल, सहज और सादा जीवन हमें प्रकृति से जोड़ता है।

संसार के किसी भी देश में महान् व्यक्तियों का अभाव नहीं रहा है। कुछ व्यक्ति अपने ही देश में ख्याति पाते हैं और कुछ व्यक्तियों की ख्याति संसार में फैल जाती है। संसार के विख्यात व्यक्तियों के जीवन पर यदि दृष्टि डाली जाए तो चाहे वह देशभक्त हो या वैज्ञानिक, साहित्यकार हो या दार्शनिक अथवा उद्योगपति, सभी में कुछ विशेषता अवश्य ही मिलेगी। ऐसे व्यक्ति संसार में बहुत कम हैं, जो जन्म से ही विख्यात हुए हों। अधिकांशतः लोगों को यह ख्याति उनके चरित्र-बल और उद्यम से ही प्राप्त होती है। संसार में ऐसे मनुष्य कम नहीं हैं, जिनका साधारण परिवार में जन्म हुआ, किंतु वे अपनी बुद्धि और लगन के कारण बहुत ऊँचे उठ गये। प्रतिदिन संसार में अनेक मनुष्य जन्म लेते हैं और मरते हैं, पर सभी का नाम उनकी मृत्यु के बाद यहाँ नहीं टिका रहता।

मनुष्य में विनय, उदारता, कष्ट-सहिष्णुता, साहस आदि चारित्रिक गुणों का विकास अत्यावश्यक है। इन गुणों का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। ये गुण व्यक्ति के जीवन को अहंकारहीन या सादा बनाते हैं। सादा जीवन या सादगी का अर्थ है- रहन-सहन, वेशभूषा और आचार-विचारों का एक निर्दिष्ट स्तर। जीवन में सादगी लाने के लिए दो बातें विशेष रूप से करणीय हैं। पहला, कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में धैर्य को न छोड़ना, दूसरा, अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम बनाना। हमारी वास्तविक आवश्यकताएँ बहुत कम होती हैं। अपनी आवश्यकताओं को हम स्वयं बढ़ाते हैं, जो बाद में हमारे जीवन को विषम बना देती हैं। इसलिए सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए और अपने विचारों को उच्च बनाये रखना चाहिए।

प्रश्न

1. मनुष्य के जीवन को जटिल बनानेवाले कारण क्या हो सकते हैं?
2. कैसा जीवन हमें प्रकृति से जोड़ता है?
3. अधिकांशतः लोगों को ख्याति कैसे प्राप्त होती है?
4. हमें किन पर संयम बनाये रखना चाहिए।
5. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. चश्मेवाले का संक्षिप्त परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'बार-बार सोचते, क्या होगा उस क़ौम का जो अपने देश की ख़ातिर घर-गृहस्थी-जीवन-ज़िंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।' इन पंक्तियों के द्वारा लेखक क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

SCERT TELANGANA

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. भई खूब! क्या आइडिया है।' इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं?
2. 'नेताजी का चश्मा' में देश-भक्ति का मार्मिक प्रतिबिंब है। इसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(इ) हालदार और पानवाले के बीच जो बातचीत हुई, उसे संवाद के रूप में लिखिए।

(ई) देश के प्रति श्रद्धा, भक्ति, प्रेम और समर्पण की भावना देश को विकसित और समृद्ध बनाती है। अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. निष्कर्ष, सराह, ऊहापोह (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)
2. वास्तविक, सफल, सामान्य (विलोम शब्द लिखिए।)
3. गिराक, आइडिया, प्लीज़ (उत्पत्ति की दृष्टि से कैसे शब्द हैं? पहचानकर लिखिए।)
4. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारकों से कीजिए।
   1. अब हालदार साहब ..... बात कुछ कुछ समझ ..... आयी।
   2. हालदार साहब ..... हर पंद्रहवें दिन कंपनी ..... काम ..... सिलसिले ..... उस कस्बे ..... गुज़रना पड़ता था।
   3. दोपहर ..... समय था। 'दुकान' ..... भीड़-भाड़ अधिक नहीं थी।

(आ) सूचना पढ़कर उसके अनुसार लिखिए।

1. रंगरूप, देशभक्ति, चौराह (विग्रह कर समास पहचानिए।)
2. भावुक, सदैव (विच्छेद कर संधि पहचानिए।)
3. नीचे दिए गये वाक्य पढ़िए। वाक्यों में प्रयुक्त 'निपात' समझिए। इनका प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए।
   1. नगरपालिका भी तो कुछ न कुछ करती ही रहती थी।
   2. किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय दिया गया होगा।
   3. अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था।
   4. हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाये।
   5. दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रते रहे।

SCERT TELANGANA

(इ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. इस कहानी में मुहावरों का सुंदर प्रयोग हुआ है। प्रयुक्त मुहावरों के अर्थ जानकर एक तालिका बनाइए।

जैसे –

1. आँखें भर आना	दुःखी होना

(ई) इस कहानी में निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग हुआ है। जैसे : <u>अपने</u> देश के ख़ातिर। इस तरह का प्रयोग समझकर अभ्यास पूरा कीजिए।

हालदार साहब .....एक कर्त्तव्य निभा रहे थे।
.....घर जा रहे थे।
.....मित्र से मिल रहे थे।
.....मित्रों से मिल रहे थे।
.....बात समझा रहे थे।
.....भावनाएँ व्यक्त कर रहे थे।

रिक्त स्थानों की पूर्ति अपना, अपने या अपनी शब्दों में से उचित शब्द का चयनकर कीजिए।

परियोजना कार्य

एक नागरिक को दूसरे नागरिकों का भी ख्याल रखना चाहिए। एक आदर्श नागरिक के रूप में अपनी ओर से किसी को कोई क्षति या कठिनाई न हो, इसीलिए मानव मूल्यों के साथ-साथ सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का अनुसरण भी हमारे लिए बेहद ज़रूरी है। इस तरह एक आदर्श नागरिक के रूप में हम में किन-किन आदर्शों का होना आवश्यक है? इसकी जानकारी इकट्ठा कर एक सूची बनाइए और कक्षा में उसका प्रदर्शन कीजिए।

SCERT TELANGANA